Indian J. Soc. & Pol. 08 (01) :73-74 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्रवादी चिंतन

इंद्रेश कुमार[1]
[1]शोधार्थी राजनीति विज्ञान, हण्डिया पी.जी. कालेज, प्रयागराज, उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

डॉ. भीमराव अम्बेडकर (1891–1956) को समाज सुधारक संविधान निर्माता के रूप में जाना जाता है। इनके समाज सुधार के लिए किए गए प्रयासों की वजह से इनको लिंकन और मार्टिन लूथर कहा गया। आधुनिक भारत में जॉति प्रथा के प्रबल विरोधी तथा सामाजिक समता और न्याय के प्रबल समर्थक अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्य प्रदेश (इन्दौर) में हुआ। 6 दिसम्बर 1956 ई० को राजधानी दिल्ली में आधुनिक भारतीय मनु और दलित वर्ग के मसीहा अम्बेडकर का देहान्त हो गया। अम्बेडकर का विचार गौतम बुद्ध, कबीर, ज्योतिबाफूले व पाश्चात्य विचारक जॉन ड्यूबी, वूकर टी वाशिंगटन से प्रभावित है। अम्बेडकर लिखित पुस्तकों और उन पर लिखी गयी विद्वानों की पुस्तकों के माध्यम से उनके विचारों का पता चलता है। अम्बेडकर के बारे में यह कहा जाता है कि वे एक राष्ट्रवादी नहीं थे। वह पृथकता के समर्थक थे। विद्वतजनों की रचनाओं और अम्बेडकर के विचारों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इन आलोचनाओं में कोई दम नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र में अम्बेडकर के राष्ट्रवादी चिंतन पर प्रकाश डाला गया है। शोध ऐतिहासिक, दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। द्वितीयक स्रोत प्रयोग में लाए गए है।

KEYWORDS: *भारतीय राजनीतिक विचारक, डॉ भीम राव अम्बेडकर, समाज सुधार, कुरीति*

वर्मा और पाल (2019) का कहना है कि 'डॉ. अम्बेडकर द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद तथा मुख्यतः भारतीय राष्ट्रवाद सामाजिक एकत्व की भावना पर आधारित था। एक ऐसा सामाजिक एकत्व जो वर्ण, जाति, धर्म, रंग, लिंग आदि के भेदभावों से मुक्त हो। कु० लवकेश (2012) कहते हैं कि अम्बेडकर ने माना कि देश विभाजन के बाद देश की एकता को पुनः स्थापित किया जा सकता है। बी. एम. शर्मा, रामकृष्ण दत्त शर्मा और सविता शर्मा (2005) का मत है कि ''कांग्रेस की विचारधारा से असहमत होने की वजह से उन पर राष्ट्र विरोधी होने का आरोप लगाया जाता है। अम्बेडकर ने 1942 ई० में बम्बई विधान सभा में एक बहस के दौरान कहा था, ''मेरा विवाद कुछ मामलों पर सर्वण हिन्दुओं से है। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं अपने देश की रक्षा के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दूँगा।''

राष्ट्र एक भावनात्मक विचार है जो लोगों के दिलों में बनता है। अम्बेडकर के दिल दिमाग में भारत है। अम्बेडकर के राष्ट्रवादी चिंतन का अध्ययन करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देने की जरूरत है –

1. कांग्रेस और अम्बेडकर के विचारों में मतभेद पर
2. ब्रिटिश शासन व शोषण संबंधी उनके विचारों पर
3. देशी रियासतों को भारत में विलय की सलाह देने पर
4. पाकिस्तान की मांग का समर्थन करने के आधारों पर
5. हिन्दू राष्ट्रवादियों के विरोध पर
6. देश के लिए एक बेहतर संविधान के निर्माण और मानवीय मूल्यों में आस्था रखने पर।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारतीय राष्ट्रवाद के समर्थक थे। वह जानते थे कि सामाजिक एकता के अभाव में राजनैतिक एकता स्थापित करना दुष्कर कार्य है। उनका मानना था कि अगर हमने इस तरह की राजनैतिक एकता स्थापित कर ली तो इसे बनाए रखना अधिक दिनों तक संभव नहीं होगा। उन्होंने कहा कि आज हम राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से विभाजित है। हम पृथक–पृथक खेमों में है और शायद मैं भी एक पृथक खेमें में हूँ। इतना सब होते हुए भी, मुझे विश्वास है कि समय और परिस्थितियों के आने पर संसार में किसी भी देश को एक बनने से नहीं रोका जा सकता और विभिन्न जातियों एवं धर्म होने पर भी, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि एक दिन हम लोग किसी न किसी रूप में संगठित ढंग से रहेंगे।'(वही)' वह सम्प्रदाय विशेष पर जोर देने को राष्ट्रीयता नहीं मानते थे। 'उन्होंने कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति की आलोचना की और कहा कि कांग्रेस पार्टी इस बात को अनुभव करने में असमर्थ रही है कि रियायतें देने की नीति ने मुस्लिम अतिक्रमण को बढ़ावा दिया है।'(वही) वह सम्प्रदायवाद, भाषावाद व क्षेत्रवाद को राष्ट्रीयता को कमजोर करने वाला मानते हैं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने पाकिस्तान की माँगों को आत्मनिर्णय के सिद्धान्त के तहत जायज ठहराया। बाद में व्यापक विरोधों की वजह से कांग्रेसी नेताओं ने भी इस मांग को समर्थन दिया। ''डॉ. अम्बेडकर अपने दृष्टिकोण में न तो ब्रिटिश शासन के समर्थक थे और देश की एकता और अखंडता के विरुद्ध। उनके मस्तिष्क में एक स्वतन्त्र अखंड और समतामूलक राज्य की रूपरेखा स्पष्ट रूप से विद्यमान थी जिसका प्रमाण उनके द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देशी रियासतों को दिया गया परामर्श है। उन्होंने शासकों को संबोधित करते हुए कहा था कि, ''उन्हें अपनी प्रभुसत्ता

1: Corresponding Author

भारतीय संघ को समर्पित कर देनी चाहिए। उनका स्वतन्त्र रहकर संयुक्त संघ से मान्यता तथा सुरक्षा प्राप्त करने का विचार कल्पना लोक के समान है।''(वही)

गांधी जी कांग्रेस की नीतियों के समर्थक थे। अम्बेडकर ने कांग्रेस के साथ–साथ गांधी जी की नीतियों की आलोचना की। प्रारंभ ने उनका मानना रहा कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों की प्रगति में सहायता करेगी लेकिन बाद में उनकी सोच परिवर्तित हुई। अम्बेडकर ने अंग्रेजों का विरोध किया और बताया कि अंग्रेज भारत का शोषण कर रहे है। 'बी.पी. वर्मा लिखते हैं, वे देशभक्त थे और राष्ट्रीय एकीकरण के विरोधी नहीं। कोई भी उनके इस विचार का विरोध नहीं कर सकता कि अछूतों के लिए हिन्दुत्व द्वारा उन पर लादी गयी घोर अपमानजनक स्थितियों का विरोध और उनसे मुक्ति, ब्रिटिश शासन से देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की तुलना से भी अधिक आवश्यक कार्य था।''(वही) अम्बेडकर ने देशी रियासतों को भारत में मिलाने की बात कही।अम्बेडकर को राष्ट्र विरोधी मानने के पीछे सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात बताई जाती है 'अम्बेकर का जिन्ना की पाकिस्तान की माँग को समर्थन देना और दलितस्थान की माँग रखना। कु. लवकेश कहते हैं, ''उनका मानना था कि किसी भी सांस्कृतिक धार्मिक या जातीय समुदाय को अपने पृथक विकास व सम्पूर्ण स्वतन्त्रता का अधिकार होना चाहिए। शोषण से बचने के लिए अलग क्षेत्र की मांग का अधिकार होना चाहिए, यदि उसमें राष्ट्र के सभी मौलिक तत्व मौजूद हो तो उस पर बंदिश नहीं लगानी चाहिए। मुस्लिमों का समुदाय भी दलितों के समुदाय की तरह था। दोनों को हिन्दू समाज ने नहीं अपनाया था और जिन्हें जानबूझकर राष्ट्र की मुख्य धारा से बाहर रखा गया, इसलिए उनकी राजनैतिक रूप से अलग होने की माँग जायज ही थी। ऐसा करने से स्वायत्तशासी प्रान्त अपने–अपने पृथक विकास के लिए पृथक राष्ट्र की मांग करते है तो ऐसा करने से संघात्मक राज्य का ही पोषण होगा उसे आघात नहीं पहुँचेगा।(लवकेश,2012)

डॉ. अम्बेकर की भारतीय राष्ट्रवाद में पूर्ण आस्था थी। उन्होंने सम्प्रदायिकता को राष्ट्रीयता से अलग किया। हिन्दू राष्ट्रवाद से असहमति जताई। अम्बेडकर ने जिन्ना के विचारों से सहमति जताई हमें पटेल और नेहरू के उनमतों पर भी ध्यान देने की जरूरत है जिन्होंने स्वीकारा कि विभाजन कोस्वीकार किए बिना भारतवर्ष की राजनैतिक समस्या का कोई समाधान नहीं है। मुस्लिम नेताओं के मन में गांठ पैदा करने का काम 'स्वराज और रामज्य' के नारों ने किया। कु. लवकेश कहते हैं, स्वराज और रामराज्य के नारों का भी मुस्लिम लीग ने नेताओं पर सीधा असर हुआ। इसे उन्होंने कांग्रेस द्वारा हिन्दू राज्य स्थापित करने का प्रयत्न बताया। कांग्रेस में कुछ अन्य नेता लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय आदि के साथ–साथ हिन्दू साम्प्रदायिक संस्थाओं जैसे हिन्दू महासभा एवं आर्य समाज के नेताओं की गतिविधियों तथा उनके सम्प्रदायिक पूर्ववृत्त ने इस विश्वास को और पक्का कर दिया। इन हिन्दू नेताओं और संस्थाओं ने हिन्दू राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।'इस प्रकार अम्बेडकर को राष्ट्रविरोधी नहीं बल्कि राष्ट्रवाद के समर्थकों में गिना जाना चाहिए। उनके कर्म और विचार राष्ट्रवाद के विकास को संबल प्रदान करते हैं।

REFERENCES

शर्मा बी०एम० शर्मा एवं अन्य, (2005) '*भारतीय राजनीतिक विचारक*', जयपुर, रावत पब्लिकेशन, पृ० 317

वर्मा,विजय कुमार, और पाल, अखिलेश कुमार (2019) *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन*, हैदराबाद ओरिएन्ट ब्लैकस्वॉन, पृ० 148

लवकेश, (2012)*डॉ० भीमराव राम जी अम्बेडकर*'', भारतीय राजनीतिक चिंतन संकल्पनाएं एवं विचारक, अजय कुमार, इस्लाम अली (संपा०), नोएडा, पीयर्सन पब्लिकेशन, पृ० 272